ए. पी. एस. एम. कॉलेज, बरौनी
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

हिन्दी विभाग, स्नातक प्रथम वर्ष(प्रथम पत्र)
सत्र-2020-2023,

डॉ मेनका कुमारी

भक्तिकाल की पृष्ठभूमि

राजनीतिक पृष्ठभूमि

- ऐतिहासिक दृष्टि से भक्ति-आंदोलन के विकास को दो चरणों में बाँटा जा सकता है। पहले चरण के अंतर्गत दक्षिण भारत का भक्ति-आंदोलन आता है। इस आंदोलन का काल छठी शताब्दी से लेकर तेरहवीं शताब्दी तक का है।

- दूसरे चरण में उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन आता है। इसकी समय-सीमा तेरहवीं शताब्दी के बाद से सत्रहवीं शताब्दी तक है। इसी चरण में उत्तर भारत इस्लाम के संपर्क में आया। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल का संबंध उत्तरी भारत के भक्ति-आंदोलन से है। आचार्य' रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल की समय सीमा सन् 1318-1643 ई. मानी है। आगे के इतिहासकारों ने भी इसी समय-सीमा को स्वीकारा है।

राजनीतिक पृष्ठभूमि

- राजनीतिक दृष्टि से भक्ति काल का विस्तार मुख्य रूप से तुगलक वंश से लेकर मुगल वंश के बादशाह शाहजहाँ के शासन काल तक है। इसलिए भक्तिकाल की राजनीतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए। तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों को समझना आवश्यक है।

- दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पश्चिमोत्तर मार्ग से तुर्कों का भारत पर आक्रमण हुआ। राजपूत राजाओं की पारस्परिक फूट तथा शत्रुता के परिणामस्वरूप पृथ्वीराज चौहान मुहम्मद गौरी के हाथों तथा जयचंद कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा मारा . गया। इसके पश्चात् ही दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई। तुर्क आक्रमणकारियों द्वारा शासित राज्य को दिल्ली सल्तनत के नाम से पुकारा जाता है। दिल्ली सल्तनत का इतिहास मुहम्मद गौरी के द्वारा भारत पर आक्रमण से शुरू होता है।

- सन् 1206 में तुर्की गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक भारत में मुहम्मद गौरी का उत्तराधिकारी बना। गौरी का ही एक दूसरा गुलाम यल्दोज़ गज़नी का उत्तराधिकारी बना। यल्दोज़ ने दिल्ली पर भी अपने अधिकार का दावा किया। तभी से दिल्ली सल्तनत ने गज़नी से अपना संबंध तोड़ लिया। भारत के लिए यह फलदायी सिद्ध हुआ। इस तरह वह मध्य-एशिया की राजनीति से अलग हो गया और भारत दूसरे देशों पर निर्भर हुए बिना दिल्ली-सल्तनत में अपना स्वतंत्र विकास कर सका।

- शुरू के सौ वर्षों तक दिल्ली-सल्तनत को अपने राज्य की सुरक्षा के लिए प्रयास करना पड़ा। दिल्ली-सल्तनत को विदेशी आक्रमण, तुर्की अमीरों के आंतरिक विरोध, विजित राजपूत शासकों और सरदारों द्वारा फिर से राज्य को वापस लेने का खतरा था। तुर्की शासकों ने इन बाधाओं पर विजय पायी। तेरहवीं सदी के अंत तक दिल्ली-सल्तनत का विस्तार न सिर्फ मालवा और गुजरात तक, बल्कि दक्कन और दक्षिण भारत तक हो गया।

- सन् 1206-1290 ई. तक दिल्ली-सल्तनत का इतिहास उतार-चढ़ाव का रहा। 1281 ई. में बलवन की मृत्यु के बाद फिर से अराजकता फैल गई। इस अराजकता का फायदा उठाकर जलालुद्दीन के नेतृत्व में कुछ सरदार सन् 1290 ई. में बलवन के अयोग्य उत्तराधिकारियों को सिंहासन से वंचित करने में सफल हुए। यहीं से खिलजी वंश की शुरुआत हुई।

- जलालुद्दीन खिलजी का शासन काल छह वर्ष का रहा। इस अल्प शासन काल में ही उसने बलवन के कठोर शासन में नरमी लाने का प्रयास किया। उसने राज्य का आधार 'प्रजा का समर्थन' माना। उसकी धारणा के अनुसार चूंकि भारत की अधिकांश जनता हिंदू थी इसलिए सही अर्थ में यहाँ कोई इस्लामी राज्य नहीं हो सकता था। सहिष्णुता और सरल दंड-विधान की नीति से उसने स्थानीय शासक वर्ग का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की।

- अगला शासक अलाउद्दीन खिलजी बना। उसने जलालुद्दीन की नीति को बिलकुल बदल डाला। जिन्होंने उसका विरोध करने का साहस किया उन्हें कठोर दंड दिया गया। अलाउद्दीन ने बड़े पैमाने पर अपने विरोधियों की हत्या की। उसने स्थानीय शासकों को अपने विरुद्ध षड्यंत्र रचने पर रोक लगाने के लिए कई कानून बनाए।

- अलाउद्दीन के मरणोपरांत गयासुद्दीन तुगलक विद्रोह के बाद दिल्ली-सल्तनत की गद्दी पर बैठा। गयासुद्दीन ने एक नए वंश की स्थापना की जिसका नाम तुगलक वंश था। तुगलक वंश का शासन 1320-1412 ई. तक रहा। इस वंश में तीन महत्वपूर्ण शासक हुए – गयासुद्दीन, उसका पुत्र मुहम्मद बिन तुगलक (1324-1351 ई.) और उसका भतीजा फिरोज़ तुगलक (1351-1388 ई.)।

- आरंभिक दो शासकों का शासन लगभग संपूर्ण भारत पर था। फिरोज के मरने के बाद दिल्ली-सल्तनत विघटित हो गयी। यद्यपि तुगलक शासकों ने सन् 1412 ई. तक शासन किया तथापि सन् 1398 ई. में तैमूर द्वारा दिल्ली पर आक्रमण को तुगलक साम्राज्य का अंत माना गया है।

- कुल मिलाकर दिल्ली-सल्तनत का शासन काल साम्राज्य के विस्तार और केंद्रीकरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अलाउद्दीन खिलजी के सत्ता में आने से पच्चीस वर्षों के भीतर दिल्ली-सल्तनत की सेनाओं ने गुजरात और मालवा पर अधिकार कर लिया। साथ ही राजस्थान के अधिकांश राजाओं को हटाने के बाद दक्षिण भारत में दक्कन और मदुरै तक के क्षेत्रों को जीत लिया गया। आगे इस विस्तृत क्षेत्र को सीधे दिल्ली प्रशासन के अधीन रखने का प्रयास किया गया। विस्तार की नीति की शुरुआत अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा हई। उसके उत्तराधिकारियों ने भी इस नीति को जारी रखा । मुहम्मद बिन तुगलक के काल में यह नीति अपने चरम पर पहुंच गई।

- तैमूर आक्रमण के बाद सुलतान महमूद तुगलक दिल्ली से भाग गया। जब तक वह वापस दिल्ली लौटा तब तक दिल्ली के आस-पास ही कई स्थानीय शासकों और जमींदारों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया था। दिल्ली सल्तनत के पतन के बाद शर्की सुलतानों ने एक बड़े भू-खंड पर कानून और व्यवस्था को बनाए रखा। इस बीच कुछ समय के लिए दिल्ली पर सैयद वंश का और फिर 1451 ई. में अफगान सरदार बहलोल लोदी का शासन स्थापित हुआ।

- अफगानों की मदद से बहलोल ने शर्कियों को हटा दिया। इस तरह उत्तर भारत में अफगानों का वर्चस्व कायम हुआ। सबसे महत्वपूर्ण लोदी सुलतान सिकन्दर लोदी (1489-1517 ई.) था। सिकन्दर लोदी ने धौलपुर और ग्वालियर को जीतकर अपने राज्य का प्रसार किया। अपने विजय अभियान के दौरान 1506 ई. में उसने आगरा शहर की नींव डाली। इस शहर का निर्माण पूर्वी राजस्थान के क्षेत्रों तथा व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से किया गया था। कालान्तर में आगरा एक बड़े शहर के रूप में विकसित हुआ।

- आगे चलकर आगरा लोदियों की दूसरी राजधानी भी बनी। 1517 ई. में सिकन्दर लोदी की मृत्यु के बाद इब्राहीम लोदी गद्दी पर बैठा। इब्राहीम के विशाल साम्राज्य स्थापित करने के प्रयत्न से अफगान और राजपूत दोनों उसके दुश्मन बन गए। इस कारण दौलत खाँ लोदी और राणा सांगा के निमंत्रण पर बाबर भारत की ओर आया।

- 1525 ई. में जब बाबर पेशावर में था उसे खबर मिली कि दौलत खाँ लोदी ने अपना पलड़ा बदल दिया है, तब बाबर और दौलत खाँ के बीच युद्ध हुआ। दौलत खाँ पराजित हुआ और पंजाब पर बाबर का अधिकार हो गया। पंजाब पर विजय प्राप्त करने के बाद 20 अप्रैल 1526 ई. में बाबर की इब्राहीम लोदी से पानीपत की ऐतिहासिक लड़ाई हुई। इब्राहीम लोदी मारा गया। इस तरह अगला युद्ध राणा सांगा के साथ 1527 ई. में खनवा में हुआ। सांगा भी पराजित हुआ। उसकी मृत्यु के साथ ही बाबर के साम्राज्य का विस्तार राजस्थान तक हो गया। उसने ग्वालियर, धौलपुर, अलवर आदि पर कब्जा कर मुगल साम्राज्य का विस्तार किया।

- आगरा से काबुल जाते समय लाहौर में बाबर की मृत्यु हो गई। तब 1530 ई. में हुमायूँ बाबर का उत्तराधिकारी बना। हुमायूँ ने आरंभ में कई युद्धों में सफलता प्राप्त की, लेकिन कालांतर में अपने अधीनस्थ अफगान सरदार शेर खाँ से पराजित हुआ। कई युद्धों के बाद अंतत: हुमायूँ को शेर खाँ ने दिल्ली के शासन से अपदस्थ कर दिया। दिल्ली की गद्दी पर बैठते ही उसने अपना नाम शेरशाह रख लिया। वह एक कुशल योद्धा और शासक रहा। शेरशाह का शासन 1555 ई. तक रहा। उसने न सिर्फ अपने साम्राज्य का विस्तार पूरे भारत में किया अपितु कुशल प्रशासन और केंद्रीकरण के परिणामस्वरूप व्यापार को भी बढ़ाया।

- शेरशाह के असामयिक निधन के बाद 1555 ई. में हुमायूँ दिल्ली पर फिर से अधिकार करने में सफल हुआ। लेकिन कुछ ही दिनों में हुमायूँ का निधन (1556 ई.) हो गया। 1556 ई. में 13 वर्ष की छोटी अवस्था में ही अकबर को गद्दी मिली।

- अकबर के उस्ताद और हुमायूँ के स्वामीभक्त और योग्य अधिकारी बैरम खाँ ने कठिन परिस्थिति का कुशलता और धैर्य से सामना किया। अकबर के नेतृत्व में आगे चलकर विशाल और स्थिर मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई। उसका साम्राज्य उत्तर-पश्चिमी अफगान देश से असम तक और उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में अहमदनगर तक फैला हुआ था। अकबर के शासनकाल में राज्य मूलत: धर्मनिरपेक्ष, सामाजिक विषयों में उदार तथा सांस्कृतिक एकता को प्रोत्साहित करने वाला बन गया।

- अकबर के बाद 17वीं सदी का पूर्वार्द्ध कुल मिलाकर प्रगति और विकास का काल था। इस अवधि में मुगल साम्राज्य जहाँगीर (1605-1627 ई.) तथा शाहजहाँ (1628-1658 ई.) इन दो शासकों के कुशल नेतृत्व में रहा। इन शासकों ने अकबर द्वारा विकसित प्रशासनिक व्यवस्था का और भी अधिक प्रसार किया। शाहजहाँ के अंत के साथ ही हिंदी साहित्य के भक्ति काल की भी समाप्ति हो गई। इसके बाद हिंदी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल का दौर शुरू हो गया।